❋ 23 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

✹ ज्ञान-

1] आंखे मिलाने का भी अर्थ समझाते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, यह है याद की यात्रा। इसको योग अग्नि भी कहा जाता है। इस योग अग्नि से तुम्हारे जो जन्म-जन्मान्तर के पाप हैं वह भस्म हो जायेंगे।

2] कृष्ण का तो जब स्वयंवर होता है, नाम ही बदल जाता है। हाँ, ऐसे कहेंगे लक्ष्मी-नारायण के बच्चे थे। राधे-कृष्ण ही स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण बनते हैं तब एक बच्चा है। फिर उनकी डिनायस्टी चलती है।

3] कलियुग में अपरमअपार दु:ख हैं, सब दु:खी हैं। ऐसा कोई नहीं होगा। जिसको दु:ख न हो। यह है रावण राज्य। यह रावण भारत का नम्बरवन दुश्मन है। हर एक में 5 विकार हैं। सतयुग में कोई विकार नहीं होते। वह है पवित्र गृहस्थ धर्म।

4] शिव तो आते ही हैं बेहद की रात में। कृष्ण का जन्म अमृतवेले होता है, न कि रात्रि को। शिव की रात्रि मनाते हैं परन्तु उनकी कोई तिथि तारीख नहीं। कृष्ण का जन्म होता है अमृतवेले। अमृतवेला सबसे शुभ मुहूर्त माना है। वो लोग कृष्ण का जन्म 12 बजे मनाते हैं परन्तु वह प्रभात तो हुई नहीं।

5] बाप कहते हैं रावण ने तुमको पतित बनाया है, अब मैं पावन बनाने आया हूँ। वह पावन दुनिया थी। अब पतित दुनिया है। 5 विकार सबमें हैं, अपरमअपार दु:ख हैं। सब तरफ अशान्ति ही अशान्ति है। जब तुम बिल्कुल तमोप्रधान, पाप आत्मा बन जाते हो तब मैं आता हूँ। जो मुझे सर्वव्यापी कह मेरा अपकार करते हैं, ऐसे-ऐसे का भी मैं उपकार करते आता हूँ। मुझे तुम निमन्त्रण देते हो कि इस पतित रावण की दुनिया में आओ। पतित शरीर में आओ।

6] कैसे वण्डरफुल रीति आते हैं, यह पिता भी है तो माँ भी है क्योंकि गऊ मुख चाहिए, जिससे अमृत निकले। तो यह मात-पिता है, फिर माताओं को सम्भालने के लिए सरस्वती को हेड रखा है, उनको कहा जाता है जगत अम्बा। काली माता कहते हैं। ऐसे काले कोई शरीर होते हैं क्या ! कृष्ण को काला कर दिया है क्योंकि काम चिता पर चढ़ काले बन गये हैं। कष्ण ही सांवरा फिर गोरा बनता है।

7] चाहे नये हो पुराने हो, ब्राह्मण बनना माना विश्व कल्याण की जिम्मेवारी लेना। जब कोई भी जिम्मेवारी होती है तो तीव्रगति से पूरी करते हैं, जिम्मेवारी नहीं होती है तो अलबेले रहते हैं। जिम्मेवारी आलस्य और अलबेलापन समाप्त कर देती है। उमंग-उत्साह वाले अथक होत हैं। वे अपने चेहरे और चलन द्वारा औरों का भी उमंग-उत्साह बढ़ाते रहते हैं।

✹ योग-

1] जब तुम अपनी नज़र बाप की नज़र से मिलाते हो तो नज़र मिलने से तुम्हारे सब दु:ख दूर हो जाते हैं क्योंकि अपने को आत्मा समझकर बाप को याद करने से सब पाप कट जाते हैं। यही है तुम्हारी याद की यात्रा। तुम देह के सब धर्म छोड़ बाप को याद करते हो, जिससे आत्मा सतोप्रधान बन जाती है, तुम सुखधाम के मालिक बन जाते हो।

2] तुम बच्चों को अब मामेकम् याद करना है। देह के सब धर्म छोड़ो, बाप को याद करो तो तुम्हारे सब पाप कट जायेंगे। सतोप्रधान बन स्वर्ग में जायेंगे।

3] बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो पाप कट जायेंगे। तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। सुखधाम के मालिक बनेंगे।

✹ धारणा-

1] मीठे बच्चे– तुम्हें साहेबजादे सो शहजादे बनना है, इसलिए याद की यात्रा से अपने विकर्मों को भस्म करो।

2] समय प्रमाण शक्तियों को यूज़ करना माना ज्ञानी और योगी तू आत्मा बनना।

...2

❋ 23 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[2]

❋ सेवा-

1] यह है ही दुःखधाम। सभी नर्कवासी हैं। तुमने बहुत पाप किये हैं, इसको कहा जाता है रावण राज्य। सतयुग को कहा जाता है रामराज्य। तुम ऐसे समजा सकते हो। भल कितनी भी बड़ी सभा बैठी हो, भाषण करने में हर्जा थोड़ेही है।

2] पहले-पहले बाप का परिचय देना चाहिए– वह निराकार बाप है, जिनका नाम ही है कल्याणकारी शिव, सर्व का सद्गति दाता। वह निराकार बाप सुख का सागर, शान्ति का सागर है।

3] समझाना चाहिए हमारे पास तो इतने वर्षों का अनुभव है, वह सिर्फ 15 मिनट में तो नहीं समझा सकते, इसमें तो टाइम चाहिए। पहले-पहले तो एक सेकण्ड की बात सुनाते हैं, बेहद का बाप जो दुःख हर्ता सुख कर्ता है, उनका परिचय देते हैं। वह हम सब आत्माओं को बाप है। हम बी.के. सब शिवबाबा की श्रीमत पर चलते हैं। बाप कहते हैं तुम सब भाई-भाई हो, मैं तुम्हारा बाप हूँ। मैं 5 हजार वर्ष पहले आया था, तब तो शिव जयन्ती मनाते हो। स्वर्ग में कुछ मनाया नहीं जाता। शिवजयन्ती होती है, जिसका फिर भक्ति मार्ग में यादगार मनाया जाता है। यह गीता एपीसोड चल रहा है। नई दुनिया की स्थापना ब्रह्मा द्वारा, पुरानी दुनिया का विनाश शंकर द्वारा। अब इस पुरानी दुनिया का वायुमण्डल तो तुम देख रहे हो, इस पतित दुनिया का विनाश शंकर द्वारा। अब इस पुरानी दुनिया का वायुमण्डल तो तुम देख रहे हो, इस पतित दुनिया का विनाश जरूर होना है इसलिए कहते हैं पावन दुनिया में ले चलो। अथाह दुःख हैं– लड़ाई, मौत, विधवापन, जीवघात करना....। सतयुग में तो अपार सुखों का राज्य था। यह एम ऑबजेक्ट का चित्र तो जरूर वहाँ ले जाता चाहिए। यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे। 5 हजार वर्ष की बात सुनात हैं– इन्होंने कैसे यह जन्म पाया? कौन से कर्म किये जो यह बनें? कर्म-अकर्म-विकर्म की गति बाप ही समझाते हैं। सतयुग में कर्म, अकर्म हो जाता हैं। यहाँ तो रावण राज्य होने कारण कर्म, विकर्म बन जाते हैं इसलिए इसको पाप आत्माओं की दुनिया कहा जाता है। लेन-देन भी पापा आत्माओं से ही है। पेट में ही बच्चा होता है तो सगाई कर देते हैं। कितनी क्रिमिनल दृष्टि है। यहाँ है ही क्रिमिनल आइज्ड़। सतयुग को कहा जाता है सिविलाइज्ड़। यहाँ आंखें बहुत पाप करती हैं। वहाँ कोई पाप नहीं करते। सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। यह तो जानना चाहिए ना। दुःखधाम सुखधाम क्यों कहा जाता है? सारा मदार है पतित और पाव होने पर इसलिए बाप कहते हैं काम महाशत्रु है, इसको जीतने से तुम जगतजीत बनेंगे। आधाकल्प पवित्र दुनिय थी, जिसमें श्रेष्ठ देवता थे। अब तो भ्रष्टाचारी हैं। एक तरफ कहते भी हैं यह भ्रष्टाचारी दुनिया है फिर सबको श्री श्री कहते रहते, जो आता है वह बोल देते हैं। यह सब समझाना है।

4] तुम यह बात सभा में भी समझा सकते हो क्योंकि कोई को भी बोलने का हक है, ऐसा मौका लेना चाहिए। ऑफिशियल सभा में कोई बीच में प्रश्न आदि नहीं करते हैं। नहीं सुनना है तो शान्ति से चले जाओ, आवाज़ न करो। ऐसे-ऐसे बैठ समझाओ। अभी तो अपार दुःख हैं। दुःख के पहाड़ गिरने हैं। हम बाप को, रचना को जानते हैं। तुम तो किसका भी ऑक्यूपेशन नहीं जानते हो, बाप ने भारत को पैराडाइज़ कब और कैसे बनाया था– यह तुम नहीं जानते हो, आओ तो समझायें। 84 जन्म कैसे लेते हैं ? 7 दिन का कोर्स लो तो तुमको 21 जन्म के लिये पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बना देंगे।